कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 03 भाग 12, (मई, 2024)
पृष्ठ संख्या 19–21

ग्रीष्म मौसम में मूंग उत्पादन प्रबन्ध : उन्नत तकनीक

अंकित तिवारी[1], शिवम सिंह[2], हरि शंकर सिंह[3] एवं वैशाली कुमारी[4]

[1,2]टीचिंग एसोसिएट/गेस्ट फैकल्टी, [3]शोध छात्र [4]एम. एस सी, छात्रा,
[1]सस्य विज्ञान विभाग– [3]मृदा विज्ञान विभाग
चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर उत्तर प्रदेश
[2] मृदा विज्ञान विभाग, [4]भू द्रश्य एवं पुष्प विज्ञान विभाग
सरदार वल्लभ भाई पटेल कृषि एव् प्रोद्योगिक विश्वविद्यालय मेरठ उत्तर प्रदेश, भारत।

Email Id: –ankit.tiwari12130@gmail.com

परिचय

मूंग ग्रीष्म एवं खरीफ दोनो मौसम की कम समय में पकने वाली एक मुख्य दलहनी फसल है। इसके दाने का प्रयोग मुख्य रूप से दाल के लिये किया जाता है, जिसमें 24–26 प्रतिशत प्रोटीन,55–60 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट एवं 1.3 प्रतिशत वसा होता है। दलहनी फसल होने के कारण इसकी जड़ो में गांठे पाई जाती है जो कि वायुमण्डलीय नत्रजन का मृदा में स्थिरीकरण (38–40 कि.ग्रा. नत्रजन प्रति हैक्टयर) एवं फसल की खेत से कटाई उपरांत जड़ो एवं पत्तियो के रूप में प्रति हैक्टयर 1.5 टन जैविक पदार्थ भूमि में छोड़ा जाता है जिससे भूमि में जैविक कार्बन का अनुरक्षण होता है एवं मृदा की उर्वराशक्ति बढाती है। उत्तर प्रदेश के अलीगढ, देवरिया, इटावा, फर्रुखाबाद, मथुरा, ललितपुर, कानपुर देहात, हरदोई और ग़ाज़ीपुर प्रमुख मूंग उत्पादक बनकर उभरे हैं, अन्य जिलों में भी संभावनाएँ हैं। निम्नलिखित बातों पर ध्यान देकर ग्रीष्म जायद में अच्छी पैदावार प्राप्त की जा सकती है

जलवायु–

मूंग के लिए नम एंव गर्म जलवायु की आवश्यकता होती है। इसकी खेती वर्षा ऋतु में भी जा सकती है। इसकी वृद्धि एवं विकास के लिए 25–32 डिग्री सेल्सियस तापमान अनुकूल पाया गया हैं। मूंग के लिए 75–90 से.मी.वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्रउपयुक्त पाये गये है। पकने के समय साफ मौसम तथा 60 प्रतिशत आर्दता होना चाहिये। पकाव के समय अधिक वर्षा हानिप्रद होती है।

भूमि–

मूंग की फसल की खेती के लिए दोमट मिट्टी जिनका पी. एच. 7.0 से 7.5 हो, उपयुक्त होती है। खेत दो बार जुताई करके तैयार किया जाता है।

भूमि की तैयारी–

ग्रीष्मकालीन मूंग की खेती के लिये रबी फसलों के कटने के तुरन्त बाद खेत की तुरन्त जुताई कर 4–5 दिन छोड कर यदि नमी की कमी हो तो पलेवा करना चाहिए। पलेवा के बाद 2–3 ट्रैक्टर पावर टिलर, रोटावेटर या अन्य आधुनिक कृषि यंत्रों से खेत जल्दी तैयार किया जा सकता है।

बुआई का समय –

ग्रीष्मकालीन मूंग की बुआई का उपयुक्त समय 10 मार्च से 10 अप्रैल तक है। बुआई में देरी के कारण गर्म हवा और बारिश से फल और फलियाँ ख़राब हो सकती हैं। तराई क्षेत्रों में मूंग की बुआई मार्च माह में करनी चाहिए।

अनुशंसित किस्मो का चयन–

उत्तर प्रदेश लिये उन्नत जातियों का चयन निम्नलिखित जातियों का चुनाव उनकी विशेषताओं के आधार पर करना चाहिये।

क्र.	किस्म का नाम	अवधि (दिन)	उपज (क्विं/हैक्ट)	प्रमुख विशेषताये कीट नियंत्रण उपयोगिता
1	नरेंद्र मूंग–1	65–70	11–13	दाना धूमिल, पीला मोज़ेक अवरोधक
2	सम्राट(पीडीएम–139)	60–65	9–10	हरा चमकीला, पीला मोज़ेक अवरोधक
3	मालवीय जागृति (एच.) यूएम–2)	65–70	12–15	हरा अनाज सहिष्णु
4	पूसा विशाल	60–65	12–14	दाना बड़ा उज्ज्वल, ग्रीष्म एवं खरीफ दोनो के लिये उपयुक्त
5	आईपीएम–2–3	65–70	9–10.0	
6	मोहा (आईपीएम–99–125)	60–65	12–15	
7	टीएमवी–37	60–65	12–14	–

बीज दर व बीज उपचार–

ग्रीष्मकालीन बुआई हेतु 25–30 कि.ग्रा/है. स्वस्थ बीज की आवश्यकता पड़ती है। बुवाई से पूर्व बीज को कार्बेन्डाजिम + केप्टान (1 + 2) 3 ग्राम दवा प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें। तत्पश्चात इस उपचारित बीज को विशिष्ट राइजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करें। जिसकी विधि इस प्रकार है आधा लीटर पानी में 250 ग्राम गुड़ और 200 ग्राम राइजोबियम कल्चर मिलाएं। इस मिश्रण को 10 किलो बीज के ऊपर छिड़क कर हल्के हाथ से मिलाएं ताकि बीज के ऊपर एक हल्की परत बन जाए. इस बीज को 1–2 घंटे तक छाया में सुखाने के बाद सुबह 9 बजे तक या शाम को 4 बजे के बाद बो दें. तेज धूप में कल्चर बैक्टीरिया के मरने की आशंका रहती है। ऐसे खेतों में जहां मूंग की खेती पहली बार या काफी समय बाद हो रही हो, कल्चर का प्रयोग अवश्य करें

पीएसबी फॉस्फेट घुलनशील बैक्टीरिया (पीएसबी) कल्चर भूमि में अनुपलब्ध फॉस्फेट को उपलब्ध स्थिति में परिवर्तित करने में बहुत सहायक है। इसलिए, नाइट्रोजन की आपूर्ति के लिए, फॉस्फेट की उपलब्धता बढ़ाने के लिए पीएसबी के साथ–साथ राइजोबियम कल्चर का उपयोग किया जाना चाहिए। पीएसबी एवं राइजोबियम कल्चर के प्रयोग की विधि एक समान है।

बुआई का तरीका –

ग्रीष्म मूंग की बुआई 4.5 सेमी. देशी हल के पीछे गहराई तक रखें पंक्तियों के बीच 25–30 सेमी की दूरी रखें तथा पौधे से पौधे की दूरी 10–15 से.मी.।

खाद एवं उर्वरक प्रबन्धः –

मात्रा किलोग्राम प्रति हैक्टेअर

उर्वरक	नाइट्रोजन	फास्फोरस	पोटाश	गंधक	जिंक
मात्रा	15 – 20	40 –45	40	15	20

सिचाई एवं जल निकास –

नमी की कमी होने पर फलियाँ बनते समय एक हल्की सिंचाई आवश्यक होती है। ग्रीष्म ऋतु में 10–15 दिन के अन्तराल पर सिंचाई की आवश्यकता होती है। फूल आना और फली का भरना सिंचाई के लिए महत्वपूर्ण चरण हैं।
फसल पकने के 15 दिन पूर्व सिंचाई बंद कर देना चाहिये।

खरपतवार नियंत्रण –

मूंग की फसल में खरपतवार नियंत्रण सही समय पर नही करने से फसल की उपज में 40–60 प्रतिशत तक की कमी हो सकती है।

शाकनाशी रसायन का नाम	मात्रा (ग्रा. सक्रिय पदार्थ /हे.)	प्रयोग का समय	नियंत्रित खरपतवार
पेन्डिमिथिलीन (स्टाम्प एक्स्ट्रा)	700 ग्रा.	बुवाई के 0–3 दिन तक	घासकुल एवं कुछ चौडी पत्ती वाले खरपतवार
इमेजेथापायर (परस्यूट)	100 ग्रा.	बुवाई के 20 दिन बाद	घास कुल, मोथाकुल एवं चौडी पत्ती वाले खरपतवार
क्यूजालोफाप ईथाइल (टरगासुपर)	40–50 ग्रा.	बुबाई के 15–20 दिन बाद	घास कुल के खरपतवारों का प्रभावी नियंत्रण

कटाई एंव गहाई–

मूंग की फसल क्रमशः 65–70 दिन में पक जाती है। फलियाँ पक कर हल्के भूरे रंग की अथवा काली होने पर कटाई योग्य हो जाती है। पौधें में फलियाँ असमान रूप से पकती हैं यदि पौधे की सभी फलियों के पकने की प्रतीक्षा की जाये तो ज्यादा पकी हुई फलियाँ चटकने लगती है अतः फलियों की तुड़ाई हरे रंग से काला रंग होते ही 2–3 बार में करें एंव बाद में फसल को पौधें के साथ काट लें। अपरिपक्वास्था में फलियों की कटाई करने से दानों की उपज एवं गुणवत्ता दोनो खराब हो जाते हैं। हॅसिए से काटकर खेत में एक दिन सुखाने के उपरान्त खलियान में लाकर सुखाते है। सुखाने के उपरान्त डडें से पीट कर या बैंलो को चलाकर दाना अलग कर लेते है वर्तमान में मूंग एवं उड़द की थ्रेसिंग हेतु थ्रेसर का उपयोग कर गहाई कार्य किया जा सकता है।

उपज. मूंग की खेती उन्नत तरीके से करने पर 8–10 क्विंटल/है. औसत उपज प्राप्त की जा सकती है। मिश्रित फसल में 3–5 क्विंटल/है. उपज प्राप्त की जा सकती है।

भड़ारण– भण्ड़ारण करने से पूर्व दानों को अच्छी तरह धूप में सुखाने के उपरान्त ही जब उसमें नमी की मात्रा 8–10: रहे तभी वह भण्डारण के योग्य रहती है।

अधिक उत्पादन लेने के लिए आवश्यक बाते –

- ❖ श्वस्थ एवं प्रमाणित बीज का उपयोग करें।
- ❖ सही समय पर बुवाई करें, देर से बुवाई करने पर उपज कम हो जाती है।
- ❖ किस्मों का चयन क्षेत्रीय अनुकूलता के अनुसार करें।
- ❖ बीजोपचार अवश्य करें जिससे पौधों को बीज एवं मृदा जनित बीमारियों से प्रारंभिक अवस्था में प्रभावित होने से बचाया जा सके।
- ❖ मिट्टी परीक्षण के आधार पर संतुलित उर्वरक उपयोग करे जिससे भूमि की उर्वरा शक्ति बनी रहती है जो टिकाऊ उत्पादन के लिए जरूरी है।
- ❖ खरीफ मौसम में मेड नाली पध्दति से बुबाई करें।
- ❖ समय पर खरपतवारों नियंत्रण एवं पौध संरक्षण करें जिससे रोग एवं बीमारियो का समय पर नियंत्रण किया जा सके।